

कृषि कुंभ  
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 10, (मार्च, 2025)  
पृष्ठ संख्या 15-16

चना फली छेदक (हेलिकोवेर्पा अर्मिजेरा) का समन्वित कीट प्रबंधन



बलवन्त यादव<sup>1</sup>, अंकित सिंह<sup>1</sup>, विकास कुमार<sup>1</sup> एवं अविनाश पाल<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोध छात्र, कृषि कीट विज्ञान विभाग,

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा, उत्तर प्रदेश

<sup>2</sup>परास्नातक छात्र, उद्यान विभाग,

दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – balwant2001yadav@gmail.com

परिचय

चना फली छेदक को कॉटन बॉल वार्म के नाम से भी जाना जाता है। यह चने का एक महत्वपूर्ण कीट है जो कि फसल को बहुत नुकसान पहुँचाता है। इस कीट का लार्वा ही नुकसान पहुँचाता है। इस कीट के द्वारा लगभग कुल नुकसान का 90–95 प्रतिशत भाग होता है। इसके लार्वा चने के अलावा अन्य फसलों पर भी आक्रमण करते हैं। यह एक बहुभक्षी एवं महानगरीय कीटों में से एक है। इसकी दो उप प्रजातीय पाई जाती है जिसमें से पहली हेलिकोवेर्पा अर्मिजेरा अर्मिजेरा जो कि मध्य और दक्षिणी यूरोप, समशीतोष्ण एशिया और अफ्रीका में तथा दूसरी हेलिकोवेर्पा अर्मिजेरा कान्फर्ता, ऑस्ट्रेलिया और ओशिनिया में पाए जाते हैं। इसका आकार और रंग अलग-अलग होता है। शरीर की लम्बाई 12 से 20 मिलीमीटर के बीच होती है। मादा के अगले पंखों का रंग पीले से नारंगी होते हैं जबकि नर में हरे-भूरे रंग के होते हैं। इसकी मादा एक बार में कई सौ अंडे दे सकती है जो कि पौधे के विभिन्न भाग पर बिखरे हुए पाए जाते हैं। इनके अंडे गोलाकार, धारीदार, लगभग 0.4 से 0.6 मिलीमीटर व्यास के होते हैं। इनके अंडे लगभग तीन दिनों के अन्दर ही लार्वा में बदल जाते हैं। लार्वा को विकसित होने में लगभग 13–22 दिन लग जाते हैं जो 40 मिलीमीटर तक लम्बे होते हैं। इनका रंग परिवर्तनशील होता है अर्थात् ये अधिकतर हरा से लेकर पीले रंग के होते हैं कभी कभी ये

लाल भूरे रंग के भी पाए जाते हैं। ये काफी आक्रामक होते हैं क्योंकि कभी कभी ये एक दुसरे को ही खा जाते हैं, इसी लिए इन्हें मांसाहारी भी कहा जाता है। लार्वा के बाद प्यूपा में मिट्टी के अन्दर लगभग 4–10 सेटीमीटर तक 10–15 दिनों में विकसित हो जाते हैं। चूंकि फली छेदक एक बहुभक्षी प्रजाति है और इसकी मेजबान पौधे टमाटर, भिन्डी, कपास, सोयाबीन, लुसर्न, तम्बाकू, आलू, मक्का, गुलदाउदी, कई फलों के पेड़, जंगल के पेड़, और भी कई तरह की सब्जियां शामिल हैं। इसके द्वारा सबसे ज्यादा नुकसान कपास, चना, टमाटर, मक्का, छोले, अल्फाल्फा, और तम्बाकू को होता है।



चित्र 1: फली बेधक कीट के जीवन चक्र (अंडा, लार्वा, प्यूपा, वयस्क)

इसके लार्वा कलियों, फूलों, अनाज, फलों, फलियों पर अपना भोजन करते हैं, साथ ही साथ ये पत्तियों और तनों को भी खा जाते हैं। कपास में वनस्पति भाग और प्रजनन संरचनाओं पर, मक्के, ज्वार, और बाजरा में अनाज पर, टमाटर और बीन में नए फलियों पर, और चने में पत्तियों पर और विकासशील फलियों पर आक्रमण करते हैं।

### समन्वित कीट प्रबंधन

चना फली छेदक का समन्वित कीट प्रबंधन एक समग्र दृष्टिकोण है जो शस्य, भौतिक, जैविक, एवं रासायनिक नियंत्रण को मिलकर कीट जनसंख्या का प्रबंधन करता है। कुछ प्रबंधन रणनीतियों की व्याख्या निम्न प्रकार की गयी है:

#### 1) भौतिक नियंत्रण

**फसाना:** वयस्क तितलियों को पकड़ने और अंडे देने से रोकने के लिए चिपचिपे जल या फेरोमोन जाल का उपयोग किया जा सकता है।

**हाथ से पकड़ना:** नियमित रूप से पौधों का निरीक्षण करके अंडे, लार्वा, और प्यूपा को हाथ से पकड़ कर हटा दें।

**बाधा उत्पन्न करना:** वयस्क तितलियों को पौधों तक पहुँचने से रोकने के लिए महीन जाली या महीन जाली वाले पंक्ति आवरण का उपयोग करें।

#### 2) शस्य नियंत्रण

**फसल चक्र:** कीट के जीवन चक्र को तोड़ने के लिए फसल चक्र का प्रयोग करें।

**स्वच्छता:** खरपतवार, मलबे, और संक्रमित पौधों को हटाकर कीट के आवास को कम करें।

**सिंचाई प्रबंधन:** अत्यधिक सिंचाई से बचे, जो वयस्क तितलियों को आकर्षित कर सकते हैं।

**बोने की तिथि:** कीट की चरम गतिविधि से बचने के लिए बोने की तिथि को समायोजित करें।

**पौधों की दूरी:** कीट के प्रसार को कम करने के लिए पौधों की दूरी को बनाये रखें।

#### 3) जैविक नियंत्रण

**परजीवी:** प्राकृतिक परजीवी, जैसे कि ट्राइकोग्रामा स्पीपी और कोटेसिया स्पीपी को प्रोत्साहित करें।

**शिकारी:** शिकारियों, जैसे कि लेडी बीटल, और लासविंग्स को बढ़ावा दें।

**रोगाणु:** कीट जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए एंटोमोपैथोजेनिक फफूंद, बैक्टीरिया या वायरस का उपयोग करें।

**नेमाटोड:** लार्वा को नियंत्रित करने के लिए एंटोमोपैथोजेनिक नेमाटोड का उपयोग करें।

#### 4) रासायनिक नियंत्रण

**कीटनाशक साबुन:** प्रारंभिक अवस्था के लार्वा को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशक साबुन का उपयोग करें।

**नीम का तेल:** वयस्क तितलियों को प्रतिरोधित करने और अंडे देने से रोकने के लिए नीम का तेल का उपयोग करें।

**पायरेथ्रॉइड्स:** वयस्क तितलियों को नियंत्रित करने के लिए पायरेथ्रॉइड्स का उपयोग करें, लेकिन प्रतिरोध को रोकने के लिए उनका अत्यधिक उपयोग करने से बचें।

**बीटी विष:** लार्वा को नियंत्रित करने के लिए बीटी विष का उपयोग करें, लेकिन प्रतिरोध प्रबंधन के लिए उचित दिशानिर्देशों का पालन करें।